

प्रश्न बनाने के दिशा-निर्देश (संस्कृत)

संस्कृत का प्रश्न पत्र चार खण्डों में विभाजित है। कुल प्रश्नसंख्या 15 है।

खण्ड: (क)

I प्रथम खण्ड अपठित अंश के अवबोधन पर आधारित है।

अनुच्छेद का चयन करते समय निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक है।

- 1.1 अनुच्छेद किसी गाइड आदि से न उतारा जाए। यह एक अध्यापक के लिए अनैतिक जैसा है। आप मूल साहित्य से , स्तरीय पत्रिका से अथवा कथा संकलन आदि से अनुच्छेद उद्धृत कर सकते हैं परन्तु उसको आवश्यकतानुसार परिवर्तित कर लें या स्वयं लिखें।
- 1.2 अनुच्छेद निर्धारित शब्दसंख्या के अन्तर्गत होना चाहिए।
- 1.3 प्रश्न का चयन प्रथम पक्ति से ही प्रारम्भ न करें। छात्र को पूरा अनुच्छेद पढ़ने का अवसर दें।
- 1.4 व्याकरण से सम्बद्ध प्रश्न जैसे इसमें विभक्ति क्या है, समास क्या है आदि आदि न दें।
- 1.5 ध्यान दें कि सभी प्रश्नों के उत्तर अनुच्छेद में निहित हों।
- 1.6 अनुच्छेद की भाषा सरल और समास रहित होनी अपेक्षित है। जटिल सन्धियों और समस्त पदों को सम्मिलित न करें

खण्ड: (ख)

खण्ड 'ख' रचनात्मक लेखन के अन्तर्गत पत्र लेखन, चित्र-वर्णन, शब्दाधारित अनुच्छेद लेखन आदि इसमें सम्मिलित हैं।

2.1 **पत्र लेखन** : ध्यान दें कि पत्र द्वारा प्रश्ननिर्माता 'क' का परिचय स्पष्ट न हो। पत्र में तिथि न लिखें। खाली छोड़ दें।

आठ रिक्त स्थानों में से चार रिक्तस्थान पत्र के औपचारिक पक्ष से सम्बद्ध हों। जैसे पत्र कहाँ से लिखा गया है, किसको लिखा गया है, अभिवादन का प्रकार, पत्र का समापन आदि। पत्र न बहुत लम्बा हो न बहुत छोटा। कुल शब्द संख्या 80-100 हो।

अत्यावश्यक : पत्र कहीं किसी गाइड से नकल न करें।

रिक्तस्थानों का लक्ष्य कर्तापूर्ति, क्रियापूर्ति, कृदन्त/तद्धितान्त्र आदि पाठ्यक्रम द्वारा निर्धारित व्याकरण पक्ष पर आधारित हों।

- 2.2 **चित्र-वर्णन** : ध्यान दें। इस प्रश्न में चित्र देना अत्यन्त आवश्यक है मन्जूषा में असम्बद्ध पद न दें। ऐसे पद भी न दें जो चित्र में दिखाए न जा सकें जैसे शीतल वायुः, मनः, हर्षित, शब्दों के अन्तर्गत क्रियापरक शब्द लें जैसे तरलः, उत्पतति, उपविष्टाः, धावन्ति आदि। पदों के अन्दर भी एक सन्तुलन अपेक्षित है जैसे चार कर्ता, चार क्रिया पद, चार अव्यय-अधः, उपरि, अंतः, बहिः इत्यादि।

खण्ड: (ग)

अनुप्रयुक्त कारक

3. इस खण्ड का उद्देश्य छात्र को व्याकरण के ज्ञान द्वारा शुद्ध भाषा का प्रयोग सिखाना है। मात्र व्याकरण के नियमों का रटना अपेक्षित नहीं है। प्रश्नों का निर्माण करते समय निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान दें।
- 3.1 ध्यान दें। सभी प्रश्न और उनके उत्तर अनुप्रयुक्त व्याकरण से संबन्ध हों। यह खण्ड बहु-वैकल्पिक प्रश्न के माध्यम से बनना है। ऐसे प्रश्न किसी न किसी लक्ष्य पर आधारित होते हैं। शुद्ध उत्तर के अलावा वैकल्पिक उत्तर ठीक न होते हुए भी कहीं न कहीं ठीक उत्तर से जुड़े हों। निम्नलिखित उदाहरण को देखिए :
- निम्नलिखित दो प्रश्न की तुलना कीजिए-

उत्तरपुस्तिकाएं

निम्नलिखित पदद्वय संयोज्य/लिखित

उदाहरण: सरस्वत्याः कोषः सम्+चयात् क्षयं याति।

- | | |
|--------------|--------------|
| (अ) सन्चयात् | (ब) सञ्चयात् |
| (स) सम्चयात् | (द) समचयात् |

यहाँ पर अशुद्ध उत्तर भी कहीं न कहीं शुद्ध उत्तर से जुड़े हैं।

अब इस प्रश्न को देखिए :

केन प्रयुक्तोऽयं पुरुषः पायं बरति?

- | | |
|----------------------|----------------------|
| (अ) प्रयुक्तो + अयम् | (ब) प्र + युक्तोऽयम् |
| (स) प्रयुक् + तीयम् | (द) प्रयुऽम + अयम् |

यहाँ 'अ' विकल्प किसी सीमा तक शुद्ध माना जा सकता है परन्तु विकल्प 'ब' और 'स' एकदम ही विकल्प नहीं कहे जा सकते। इसके स्थान पर यह प्रश्न इस प्रकार भी बनाया जा सकता है।

- | | |
|---------------------|----------------------|
| (अ) प्रयुक्त + अयम् | (ब) प्रयुक्तो + अयम् |
| (स) प्रयुक्तः अयम् | (द) प्रयुक्तः यम् |

इस प्रश्न में वैकल्पिक उत्तरों का कहीं न कहीं मूल उत्तर से सम्बन्ध है यहाँ पर ये सभी विकल्प अशुद्ध है।

खण्ड : घ

यह खण्ड पाठ्यपुस्तक के अवबोधन पर आधारित है। इस खण्ड के प्रश्न बनाने में निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान दें-

4.1 कोई भी प्रश्न निर्धारित पाठ्यक्रम की सीमा से बाहर न हो।

4.2 चयनित अनुच्छेद न बहुत बड़ा हो न बहुत छोटा।

यह प्रायः 40 शब्दों के अन्तर्गत हो सकता है। (मुद्रित 4-5 पंक्तियाँ)।

4.3 प्रथम खण्ड में दिए गये निर्देशों को एक बार फिर पढ़ें। प्रथम सीधे प्रथम पंक्ति से न उठाएँ।

4.4 सभी प्रश्नों के उत्तर अनुच्छेद में ही निहित हों। जैसे..... का पर्याय अनुच्छेद से चुन कर लिखिए न कि इस शब्द का पर्याय लिखें।

स्वयं अनुच्छेद में दिए गए शब्द का पर्याय/विलोम आदि अपेक्षित नहीं हैं।

4.5 नाट्यांश चयन करते समय यदि नाट्यांश पाठ पाठ्यक्रम में नहीं हैं तो आप गद्य/कथा पाठ से संवादात्मक अंशों का चयन कर सकते हैं।

4.6 कथाक्रमलेखन के अन्तर्गत जिन वाक्यों का चयन करें, वे अन्तः सम्बद्ध होने चाहिए। कालोऽहम् आदि गद्य पाठों से चुने गए वाक्य प्रायः परस्पर सम्बद्ध नहीं होते। प्रत्येक वाक्य दूसरे वाक्य से जुड़ा हुआ होना चाहिए जैसे यह सुनकर इसके बाद घटनाएँ भी एक दूसरे से अन्तः सम्बद्ध हों।

4.7 सन्दर्भानुसार अर्थचयन के अन्तर्गत ऐसे शब्द चुनिए जिनके कई अर्थ हो सकते हैं परन्तु इस सन्दर्भ में केवल वही अर्थ स्वीकार्य हो। जैसे निम्नलिखित प्रश्न स्वीकार्य नहीं हैं-

पाप्मानं प्रजहि ह्येनम्

(अ) विनाशय

(ब) त्यज

(स) प्रजा एव

(द) प्रजायाः पालनम्

यहाँ तीन वैकल्पिक उत्तर मूल शब्द से किसी भी प्रश्न से जुड़े नहीं हैं। अब निम्नलिखित प्रश्न को देखें-

तस्मै वदान्यगुर्वे तरवे नमोऽस्तु

(अ) प्रसिद्धाचार्याय

(ब) उदात्तेषु श्रेष्ठाय

(स) प्रशासनीयशिक्षकाय

(द) वचनीयभारयुक्ताय

संक्षेप में, प्रत्येक वैकल्पिक उत्तर मुख्य उत्तर के केन्द्र बिन्दु से जुड़ा हुआ होना चाहिए। वह ठीक लगे, पर ठीक न हो।

भूमिका और योग्यता विस्तार से प्रश्न न पूछें। प्रश्न मूल पाठ पर आधारित करें।

प्रश्न पत्र का उद्देश्य छात्र की भाषा को समझने की योग्यता की जांच करना है और वाक्य के अन्तर्गत आए हुए पदों के परस्पर सम्बन्ध से परिचित कराना है। व्याकरण का ज्ञान मात्र अपेक्षित नहीं है, व्याकरण का प्रयोग अपेक्षित है। साहित्य समुचित पदों के संदर्भानुसार समुचित चयन पर आधारित होता है, अन्यथा वह साहित्य नहीं कहलाता।

सावधान

उपर्युक्त निर्देशों को ध्यान से पढ़ें और प्रश्न बनाते समय दृढ़ता से पालन करें। निर्देशों का उल्लंघन करने पर प्रश्न निरस्त किया जा सकता है कृपया किसी गाइड आदि पुस्तक से नकल न करें। यह अपेक्षित नहीं है।